

डी-डॉलराइजेशन और भारत

प्रलम्बिस के लिये:

[BRICS+](#), [डी-डॉलराइजेशन](#), [केंद्रीय बैंक डिजिटल मुद्राएँ \(CBDC\)](#), [बैंक फॉर इंटरनेशनल सेटलमेंट्स \(BIS\)](#), [16वाँ कज़ान BRICS शिखर सम्मेलन 2024](#), [क्रिप्टोकॉरेंसी](#), [वनिमिय दर](#), [मुद्रा अवमूल्यन](#), [ब्लॉकचेन भुगतान](#), [UPI](#), [RuPay](#), [IMF](#), [SDR](#), [सॉवरेन वेलथ फंड](#), [G20](#)

मेन्स के लिये:

डी-डॉलराइजेशन और भारतीय तथा वैश्विक अर्थव्यवस्था पर इसका प्रभाव

[स्रोत: बज़िनेस स्टैंडर्ड](#)

चर्चा में क्यों?

हाल की वित्तीय और मुद्रा पहलों, विशेष रूप से [BRICS+](#) ढाँचे के भीतर, के अंतर्गत अमेरिकी डॉलर-प्रधान प्रणाली पर निर्भरता को कम करने ([डी-डॉलराइजेशन](#)) और वैश्विक व्यापार तथा वित्त के लिये [वैकल्पिक तंत्र](#) स्थापित करने का प्रयास किया जा रहा है।

डी-डॉलराइजेशन

- यह वैश्विक व्यापार, वित्त और वदेशी मुद्रा अरक्षण नधियों में [अमेरिकी डॉलर के प्रभुत्व को कम करने](#) की प्रक्रिया को संदर्भित करता है।
- इसमें अंतरराष्ट्रीय लेनदेन, क्रेडिट ट्रेडिंग (जैसे तेल) और वदेशी मुद्रा धारिताओं के लिये [अमेरिकी डॉलर](#) को अन्य मुद्राओं या परस्परव्यवस्थापितियों (जैसे सोना, [क्रिप्टोकॉरेंसी](#) या क्षेत्रीय मुद्राएँ) के साथ प्रतिस्थापित करना शामिल है।

डी-डॉलराइजेशन संबंधी हाल की वित्तीय और मुद्रा पहलें कौन-सी हैं?

- [mBridge परियोजना](#): यह [सेंट्रल बैंक डिजिटल मुद्राओं \(CBDC\)](#) के उपयोग पर आधारित एक [डिजिटल क्रॉस-बॉर्डर भुगतान](#) प्रणाली है। इसे शुरुआत में [बैंक फॉर इंटरनेशनल सेटलमेंट्स \(BIS\)](#) के समर्थन से [चीन](#), [थाईलैंड](#) जैसे कई देशों के केंद्रीय बैंकों द्वारा बढ़ावा दिया गया था।
 - अनुमानों के अनुसार डॉलर के प्रभुत्व को बनाए रखने के लिये [अमेरिकी दबाव के कारण BIS mBridge से अलग हुआ](#)।
- [BRICS+ पहल](#): [BRICS](#) ब्रिज और [BRICS](#) क्लियर, [BRICS+](#) देशों में भुगतान और समाशोधन प्रणाली स्थापित करने के लिये प्रस्तावित वित्तीय प्रणालियाँ हैं।
 - [BRICS+](#) समूह में मूल [BRICS](#) राष्ट्र अर्थात् [ब्राज़ील](#), [रूस](#), [भारत](#), [चीन](#) और [दक्षिण अफ्रीका](#) सहित नए सदस्य अर्थात् [मिस्र](#), [इथियोपिया](#), [ईरान](#), [संयुक्त अरब अमीरात](#) और [इंडोनेशिया](#) शामिल हैं।
- [पेट्रो-युआन बाज़ार](#): वैश्विक तेल व्यापार का 10.5% और वैश्विक तेल फ्यूचर्स (मानकीकृत संबन्धि) का 14.4% [शंघाई इंटरनेशनल एनर्जी एक्सचेंज \(2018\)](#) द्वारा संपन्न होता है।
 - [सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात के गैर-डॉलर तेल व्यापार से मांग](#) में वृद्धि के कारण [पेट्रो-युआन](#) को बढ़ावा मिलता है और [अमेरिकी डॉलर के एक स्थिर विकल्प के रूप में इसकी विश्वसनीयता बढ़ती है](#)।
- [BRICS मुद्रा](#): [16वें कज़ान BRICS शिखर सम्मेलन 2024](#) में, "यूनटि" नामक एक नई नोटिफिकेशन मुद्रा का उपयोग करने के लिये संधिपूर्ण रूप में एक समझौता हुआ, जो 40% सोने और सदस्य देशों की 60% स्थानीय मुद्राओं द्वारा समर्थित है।

डी-डॉलराइजेशन के वैश्विक लाभ क्या हैं?

- भू-राजनीतिक जोखिम में कमी: देश अमेरिका के उन प्रतिबंधों और वदेश नीति निर्णयों से स्वयं को सुरक्षित रख सकते हैं जिनसे डॉलर के

- प्रभुत्व को बढ़ावा मिला है (जैसे, **परसिंपत्तियों को फ्रीज़ करना** अथवा वैश्विक वित्तीय प्रणाली के अभिगम को प्रतिबंधित करना)।
- उदाहरण के लिये, **वर्ष 2022** में यूक्रेन पर रूस के आक्रमण के बाद, पश्चिमी देशों ने रूस की **300 बिलियन अमेरिकी डॉलर** से अधिक की संपत्तिका कीलन कर लिया।
 - **विविधीकरण:** डी-डॉलराइजेशन से **बहु-मुद्रा उपयोग** को बढ़ावा मिला है, एक मुद्रा पर निर्भरता कम होती है और वैश्विक वित्त में संतुलन स्थापित होता है।
 - उदाहरण के लिये, वैकल्पिक भुगतान प्रणाली स्थापित किये जाने हेतु **पेट्रो-युआन और भारतीय रुपए** का उदय।
 - **क्षेत्रीय मुद्राओं का सुदृढीकरण:** देश आर्थिक संप्रभुता का सुदृढीकरण करने और **वनिमिय दर जोखिम** को कम करने के उद्देश्य से व्यापार में अपनी मुद्राओं को बढ़ावा दे सकते हैं।
 - उदाहरण के लिये, भारत संयुक्त अरब अमीरात के साथ रुपए में तेल का व्यापार करता है।
 - **सभेद्यता में सुधार:** डी-डॉलराइजेशन होने से देशों पर अमेरिकी मौद्रिक नीति (जैसे, **ब्याज दर में परिवर्तन**) से पड़ने वाला **प्रभाव कम** होगा, जिससे **पूँजी पलायन और मुद्रा अवमूल्यन** जैसे प्रभावों से संरक्षा मिलेगी।
 - **सोने के उपयोग में वृद्धि:** डी-डॉलराइजेशन के कारण आरक्षित परसिंपत्तिका रूप में **सोने का उपयोग पुनः प्रचलित हो गया है**, जिससे यह वैध/कागज़ी मुद्राओं के लिये एक **स्थिर विकल्प** बन गया है।
 - **डिजिटल मुद्राओं को बढ़ावा:** डी-डॉलराइजेशन से **डिजिटल मुद्रा और ब्लॉकचेन भुगतान** का विकास तेज़ी से होगा, जिससे वित्तीय नवाचार को बढ़ावा मिलेगा।
 - उदाहरण के लिये, चीन का डिजिटल युआन (e-CNY) और **भारत का डिजिटल रुपया (e₹)**।

वैश्विक डी-डॉलराइजेशन संबंधी चर्चाएँ क्या हैं?

- **अल्पकालिक अस्थिरता:** मुद्रा आरक्षित नधियों अथवा व्यापार समझौतों में सहसा परिवर्तन होने से वैश्विक बाज़ारों में अस्थिरता बढ़ सकती है, क्योंकि वर्तमान में डॉलर **अंतरराष्ट्रीय व्यापार और वित्त का आधार** है।
- **विकल्पों की सीमिति स्वीकृति:** कई वैकल्पिक मुद्राओं (जैसे, युआन, रुपया या रूबल) में **तरलता, स्थिरता और वैश्विक विश्वास का अभाव** होता है जो अमेरिकी डॉलर में है।
- **वर्षावन का जोखिम:** डी-डॉलराइजेशन से **प्रतिसिंपर्द्धी मुद्रा ब्लॉकों** का निर्माण हो सकता है, जिससे वैश्विक अर्थव्यवस्था **वर्षावन** हो सकती है और अंतरराष्ट्रीय व्यापार और निवेश जटिल हो सकता है।
- **भू-राजनीतिक तनाव:** अमेरिका डी-डॉलराइजेशन प्रयासों पर आक्रामक प्रतिक्रिया दे सकता है, जिससे **व्यापार युद्ध, प्रतिबंध या अन्य प्रकार की आर्थिक जवाबी कार्यवाही** बढ़ सकती है।
 - उदाहरण के लिये, डॉलर पर निर्भरता कम करने के प्रयास में BRICS देशों के लिये **अमेरिकी टैरिफ का खतरा**।
- **वैश्विक परिणाम:** डॉलर की आरक्षित स्थिति में गिरावट से **अमेरिकी ऋण की मांग कम हो सकती है**, और अमेरिका में आर्थिक अस्थिरता हो सकती है, जिसके **वैश्विक प्रभाव** हो सकते हैं, क्योंकि अमेरिका सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है।
- **वनिमिय दर निर्धारण की समस्या:** वैश्विक बेंचमार्क के रूप में अमेरिकी डॉलर के बिना, देशों को बहु-मुद्रा बास्केट जैसे विकल्पों का उपयोग करना होगा, जिससे वनिमिय दरें जटिल हो जाएंगी।
 - उदाहरण के लिये, **भारत और रूस** लगातार अपनी स्थानीय मुद्राओं के आधार पर मुद्रा वनिमिय दर पर बातचीत कर रहे हैं।

डी-डॉलराइजेशन पर भारत का दृष्टिकोण क्या है और इसका भारत पर क्या प्रभाव पड़ता है?

- **डी-डॉलराइजेशन पर भारत का दृष्टिकोण:** भारत **BRICS+ मुद्रा वार्ताओं** में शामिल है, तथा सतर्कता बरतते हुए कहा है कि उसका **अमेरिकी डॉलर को कमज़ोर करने का कोई इरादा नहीं है**, क्योंकि वह इसे वैश्विक स्थिरता के लिये **आवश्यक** मानता है।

रुपए का अंतर्राष्ट्रीयकरण

अर्थ

- सीमा पार हस्तांतरण में भारतीय रुपए के उपयोग में वृद्धि करना

इसमें शामिल है

- आयात और निर्यात के लिये रुपए का उपयोग
- चालू और पूंजी खाता हस्तांतरण के लिये रुपए का उपयोग

भारतीय रुपया चालू खाते में पूरी तरह से लेकिन पूंजी खाते में आंशिक रूप से परिवर्तनीय है।

आवश्यकता

- अमेरिका द्वारा अमेरिकी डॉलर का हथियारीकरण (प्रतिबंधों के लिये)
- डी-डॉलराइजेशन की लहर
- चीनी मुद्रा रैन्मिन्बी का बढ़ता अंतर्राष्ट्रीयकरण
- वैश्विक विदेशी मुद्रा बाजार कारोबार में भारत की न्यूनतम हिस्सेदारी (1.7%)

RBI के प्रयास

- सीमा-पार व्यापार में भारतीय मुद्रा - विदेश व्यापार नीति 2023 में प्रमुख चटक
- 18 देशों के साथ रुपए में व्यापार समझौते हेतु तंत्र प्रस्तुत किया गया
 - इन देशों के बैंकों को विशेष वोस्ट्रो रुपया खाते (SVRAs) खोलने की अनुमति दी गई
- "भारतीय रुपए में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार समझौता" पर परिपत्र (2022)
- भारतीय रुपए में बाह्य वाणिज्यिक उधार को सक्षम बनाया गया

महत्त्व

- अमेरिकी डॉलर पर कम निर्भरता
- विदेशी मुद्रा भंडार रखने की कम आवश्यकता
- भारतीय व्यापार की बेहतर सौदा निपटान शक्ति
- मुद्रा की अस्थिरता का कम जोखिम

चुनौतियाँ

- रुपया का पूरी तरह से परिवर्तनीय न होना
- अन्य देशों को भारतीय रुपया (INR) रखने की कम आवश्यकता; वैश्विक निर्यात में भारत की कम हिस्सेदारी
- बाह्य आघातों के प्रति रुपया और अधिक संवेदनशील हो सकता है
- रुपए की आपूर्ति पर भारत का कम नियंत्रण

उठाए जा सकने योग्य कदम

- INR में अधिक उदारीकृत निपटान (भारत और विदेशों में)
- भारत को वैश्विक वित्तीय बाजार में अपनी पहुँच का विस्तार करना चाहिये
- व्यापार घाटे को कम करने के लिये निर्यात-उन्मुख अर्थव्यवस्था में परिवर्तित होना

Drishiti IAS

चत्ताएँ

- **भारतीय रुपए को बढ़ावा देना:** यह द्वपिक्षीय और बहुपक्षीय व्यापार समझौतों में भारतीय रुपए के उपयोग को प्रोत्साहित करता है। उदाहरण के लिये, तेल आयात के लिये भारत का रूस के साथ रुपए में व्यापार।
- **अधिक मौद्रिक नीति स्वायत्तता:** डॉलर पर निर्भरता कम करने से भारत को अमेरिकी नीतित्त बदलावों से प्रभावित हुए बना, मुद्रास्फीति और ब्याज दरों को प्रबंधित करने के लिये **मौद्रिक नीति पर अधिक नियंत्रण** मलित है।
- **रज़िर्व का वविधिकरण:** डी-डॉलरइज़ेशन से भारत को अपने रज़िर्व को अन्य मुद्राओं (जैसे, यूरो, येन, युआन) या स्वरण में वविधित लाने में मदद मलित है, जसिसे डॉलर के अवमूल्यन का जोखमि कम हो जाता है।
- **अमेरिकी प्रतर्बिधों के प्रतर् जोखमि में कमी:** इससे अमेरिकी प्रतर्बिधों के प्रतर् भारत की संवेदनशीलता कम हो जाती है तथा उसे अधिकि भू-राजनीतिक लचीलापन प्राप्त होता है।
 - यह अमेरिका-केंद्रित **स्वफिट प्रणाली** पर निर्भरता को कम करता है, तथा भारत की वत्तीय प्रणाली को जोखमिों और प्रतर्बिधों से बचाता है।

चत्ताएँ

- **वदिशी नविश पर प्रभाव:** डॉलर से दूर जाने से **वदिशी नविशक हतोत्साह** हो सकते हैं जो डॉलर-मूल्य वाली संपत्तियों की **स्थिरता और पूरवानुमेयता** को प्रसन्न करते हैं।
- **रज़िस्व में वविधिता लाने में चुनौतियाँ:** वैकल्पिक मुद्राएँ या स्वर्ण जैसी परसंपत्तियाँ भारत को **नए जोखिमों** के प्रति सुभेद बना सकती हैं, जैसे **मुद्रा मूल्यहरास** या **वस्तुओं की कीमत में उतार-चढ़ाव**।
 - भारत के लिये **चीनी युआन पर अत्यधिक निर्भरता का जोखिम** है, जिससे भू-राजनीतिक और आर्थिक चुनौतियाँ सामने आ रही हैं।

- धन प्रेषण पर प्रभाव: डी-डॉलराइजेशन से भारत में डॉलर में भेजी जाने वाली धनराशि बाधित हो सकती है, जिससे लाखों परिवार प्रभावित होंगे।

भारत के लिये आगे क्या है?

- रुपए को मज़बूत बनाना: भारत-UAE तेल व्यापार की तरह रुपए में द्विपक्षीय व्यापार का विस्तार करना, साथ ही करेंसी स्वेप और ब्रिक्स+ पहल जैसे क्षेत्रीय ढाँचे को बढ़ावा देना।
 - सीमा पार लेनदेन के लिये [UPI](#), [RuPay](#) और [डिजिटल रुपया \(ईरू\)](#) का अंतरराष्ट्रीयकरण करना।
- रज़िर्व में विविधता लाना: यूरो, येन, युआन, स्वर्ण और [IMF SDR](#) में रज़िर्व का विविधीकरण करके अमेरिकी डॉलर पर निर्भरता कम करना, साथ ही स्थिरता के लिये [संप्रभु संपदा नधि \(SWF\)](#) और कमोडिटी भंडार का विकास करना।
- जोखिम प्रबंधन: बहु-मुद्रा व्यापार प्रणाली को बनाए रखना, विविधतापूर्ण व्यापार के लिये [आसियान](#), [यूरोपीय संघ](#) और [अफ्रीका](#) के साथ संबंधों को मज़बूत करना तथा रुपए में [नविशकों का विश्वास](#) सुनिश्चित करना।
- भारत की वित्तीय स्थिति को सुदृढ़ करना: मुंबई को वैश्विक वित्तीय केंद्र के रूप में स्थापित करना, [बॉण्ड बाज़ार](#) में तरलता को बढ़ावा देना, तथा [IMF](#), [G-20](#) और अन्य निकायों के माध्यम से बहु-मुद्रा प्रणाली की वकालत करना।

दृष्टि भेन्स प्रश्न:

प्रश्न: डी-डॉलराइजेशन की अवधारणा और भारत की अर्थव्यवस्था पर इसके प्रभाव पर चर्चा कीजिये।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा वगित वर्ष के प्रश्न

????????

प्रश्न. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये: (2019)

1. भारत का अधिकांश विदेशी ऋण सरकारी सत्त्वों के ऋणी होने के द्वारा है।
2. भारत का सारा विदेशी ऋण US डॉलर के मूल्यवर्ग में है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 व 2 दोनों
- (d) न तो 1 न ही 2

उत्तर: (d)

प्रश्न. हाल ही में IMF के SDR बास्केट में निम्नलिखित में से किस मुद्रा को जोड़ने का प्रस्ताव दिया गया है?

- (a) रूबल
- (b) रैंड
- (c) भारतीय रुपया
- (d) रेनमनिबी

उत्तर: (d)

??????:

प्रश्न: विश्व व्यापार में संरक्षणवाद और मुद्रा चालबाजियों की हाल की परिघटनाएँ भारत की समष्टि आर्थिक स्थिरता को किस प्रकार से प्रभावित करेंगी? (वर्ष 2018)

प्रश्न: सोने के लिये भारतीयों के उन्माद ने हाल के वर्षों में सोने के आयात में प्रोत्कर्ष (उछाल) उत्पन्न कर दिया है और भुगतान-संतुलन और रुपए के बाह्य मूल्य पर दबाव डाला है। इसको देखते हुए, स्वर्ण मुद्रीकरण योजना के गुणों का परीक्षण कीजिये। (वर्ष 2015)

